PHILOSOPHY

PG, III Sem. (Indian Logic)

Dr. S. K. Singh
Mob.-9431449951

न्याय : अनुमान

→ 'प्रत्यक्ष' के पश्चात 'अनुमान' दूसरा साधन है, जिससे ज्ञान की प्राप्ति होती है। अनुमान की एक परिभाषा यह दी जाती है कि "जो ज्ञान विद्यमान है उसकी सहायता से एक अन्य नया ज्ञान प्राप्त करने की प्रणाली को 'अनुमान' कहते हैं।"

→ अनुमान वह ज्ञान है जो अन्य ज्ञान के पश्चात आता है। चिह्न (लिंग) के ज्ञान से हम पदार्थ का ज्ञान प्राप्त करते हैं, जिनमें वह चिन्ह विद्यमान हो।

→ 'अनुमान' शब्द दो शब्दों से बना है – 'अनु' तथा 'मान'। 'अनु' का अर्थ बाद में (पश्चात) और 'मान' का अर्थ ज्ञान होता है। अतः 'अनुमान' का अर्थ होता है वह ज्ञान जो एक ज्ञान के बाद मिले। वह ज्ञान प्रत्यक्ष ज्ञान ही है जिसके आधार पर अनुमान को प्राप्त किया जाता है। जैसे - पहाड़ पर धुँआ देखकर वहाँ आग होने का अनुमान किया जाता है।

→ इस प्रकार अनुमान वह ज्ञान है, जिसमें प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष की ओर जाना होता है। अनुमान वह ज्ञान है जो पूर्व ज्ञान पर निर्भर है। जैसे -

पहाड़ पर अग्नि है
~~क्योंकि पहाड़ पर आग है~~
क्योंकि वहाँ धुँआ है।
अतः पहाड़ पर अग्नि है।

यह एक अनुमान है जिसमें प्रत्यक्ष धुँआ का होता है और तत्पश्चात आग का अनुमान

होता है। यह अनुमान धुंआ और अग्नि के बीच व्याप्ति संबंध के आधार पर सिद्ध हो पाता है।

→ 'व्याप्ति' का अर्थ है - दो वस्तुओं के बीच नित्य, साहचर्य एवं औपाधिक संबंध। यह संबंध धुंआ और आग के बीच तो है किन्तु आग और चूल्हे के बीच नहीं क्योंकि आग और धुंआ में औपाधिक संबंध है।

→ अनुमान के तीन अंग या अवयव हैं - (i) पक्ष, (ii) साध्य और हेतु (लिंग)।

(i) पक्ष → अनुमान का वह अंग है जिसके संबंध में अनुमान किया जाता है। जैसे उपर्युक्त उदाहरण में 'पहाड़' पक्ष है क्योंकि पहाड़ के संबंध में अनुमान किया गया है।

(ii) साध्य → यह अनुमान का वह अंग है जिसे पक्ष के संबंध में सिद्ध किया जाता है। उपर्युक्त उदाहरण में आग साध्य है।

(iii) हेतु (लिंग) → इसे चिह्न भी कहते हैं। जिसके द्वारा साध्य (आग) को पक्ष (पहाड़) पर होना बताया जाता है वह हेतु या लिंग है। उपर्युक्त उदाहरण में हेतु धुंआ है।

→ इस प्रकार अनुमान में हेतु के प्रत्यक्ष से पक्ष पर साध्य का ज्ञान प्राप्त होता है।

Scanned with CamScanner